Indian Council of World Affairs
Sapru House, Barakhamba Road
New Delhi

तेरहवां सप्रु हाउस - संयुक्त राष्ट्र व्याख्यान

द्वारा

महामहिम श्री बान की मून

संयुक्त राष्ट्र महासचिव

विषय

"बदलते विश्व में भारत और संयुक्त राष्ट्र"

स्थान

सप्रु हाउस, नई दिल्ली

12जनवरी **2015**

इस बैठक में भाग लेने हेतु समय निकालने के लिए आपका धन्यवाद। मैं भारतीय विदेश सेवा के सभी वरिष्ठ अतिविशिष्ट राजदूतों, और मेरे साथ आए मेरे सहयोगियों और संयुक्त राष्ट्र संघ के देशों के दल , रेजिडेंट कॉडिनेटर को भी धन्यवाद देना चाहूंगा। अंतरराष्ट्रीय समुदाय और संयुक्त राष्ट्र पर अपने कुछ विचारों को साझा करने हेतु इसमें भाग लेना बड़े सम्मान की बात है।

महामहिम श्री बान की मून तेरहवें सप्रु हाउस - संयुक्त राष्ट्र व्याख्यान देते हुए

राजदूत घारेखान ने प्रश्नोत्तरी सत्र से पूर्व ही मुझे चुनौतीपूर्ण प्रश्न दिया है। मैं इसका ध्यान रखूंगा कि मैं इसका उत्तर कैसे दूं, किंतु मैं मानता हूं कि आपको मुझसे बेहतर पता होना चाहिए।

महासचिव के रूप में मैं राजनीतिज्ञों , प्रोफेसरों, वरिष्ठ कूटनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों और कारोबारी समुदायों जैसे विभिन्न श्रोता समूहों को संबोधित करता रहा हूं। इनमें से सबसे कठिन श्रोता आप जैसे लोग - वरिष्ठ कूटनीतिज्ञ - हैं क्योंकि मेरे हिसाब से ऐसा कुछ नहीं है जिन्हें मैं जानता हूं और वे नहीं जानते हैं।

यह मेरी समस्याव है। यदि मैं कुछ कारोबारी लोगों के समूह अथवा कुछ अन्य राजनीतिज्ञों के समूह को संबोधित करूंग तो मैं ऐसी कुछ बातें बड़े गर्व से बताउंगा जिन्हें बारे में उन्हें नहीं पता हो किंतु मुझे जानकारी होगी। परंतु चूंकि हम एक ही पेशे में कार्य करते रहे हैं- हो सकता है कि आप जो कर रहे

हैं, उससे मैं कुछ अधिक कर रहा होउंगा। (अस्पष्ट) क्योंकि मैं इस समय कुछ भावी मुद्दों सहित कुछ वर्तमान मुद्दों से निपट रहा हूं।

और वास्तव में, मैं दिल्ली आकर बहुत खुश हूं। मैं भारत वापस आके बहुत खुश हुआ।

भारत के साथ मेरा संबंध, जैसा कि श्री भाटिया ने कहा, ''मैं यहां क्यों हूं?'', मैंने यहीं से 1972 में 43 वर्ष पूर्व अपना कार्य शुरू किया। उसके बाद से मैंने कई बार भारत की यात्रा की। जब मैंने 1975 में यह स्थान त्याग रहा था, तो मैंने उनसे कहाकि मैं इस स्थान को आधे मन से छोड़ रहा हूं। आपको फ्रैंक सिनात्रा की बड़ी प्रसिद्ध कहानी के बारे में पता होगा- मैंने यहां दिल्ली में अपना दिल छोड़ दिया। मैं नियमित रूप से यह देखने के लिए वापस आ रहा हूं कि क्या मेरा आधा दिल ठीक से कार्य कर रहा है। मेरेकुलनाम 'बान' का कोरिया बोली में शाब्दिक अर्थ है -'आधा'। नि:संदेह कुछ अन्य बेहतर अर्थ अवश्य हैं किंतु 'आधा' अर्थ भी है। कुछ लोग मुझे 'हाफ बान', अथवा ऐसा ही कुछ कहते हैं। जब कभी भी मैं नई दिल्ली वापस आता हूं, मैं पूरा हो जाता हूं। यही मैं आपसे कह सकता हूं। मैं अपने पेशेवर कैरियर के अतिरिक्त इस विशेष संबंध के कारण निश्चय ही खुशी महसूस करता हूं , मेरे कुछ परिवार यहां रहते हैं जिनके बारे में आपमें से अधिकांश लोग जानते हैं इसलिए इसे दुहराने की आवश्यकता नहीं है। मैंने आज ही अपने भारतीय संबंधियों से यहां आने से पूर्व मुलाकात की है।

देवियों और सज्जनों, सप्रु हाउस को संबोधित करना बड़े सौभाग्य की बात है।

मैं समझता हूंकिलगभग साठ वर्ष पूर्व मेरे माननीय पूर्वज डांग हैमरस्कोल्डने इस परिषद् में आए थे और उन्होंने सामूहिक सुरक्षा के बारे में भाव प्रवणता से बात की थी। उन्होंने कहा , ''किसी एक ही कमजोरी सबकी कमजोरी होती है, और किसी एक की ताकत सबकी ताकत होती है।"

यही बात आज भी सही है। इसलिए मैं विश्व नेताओं से कह रहा हूं , ''हम एक टीम के रूप में साथ मिलकर कार्य करें।'' संयुक्त राष्ट्र संघ वास्तव में एक टीम के रूप में कार्य करने की कोशिश करता है। ऐसा लगता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ एक बड़ा खुला, संगठन है। कभी-कभी मैं यह भी नहीं समझ पाता हूं कि उनके अधिदेश वास्तव में हैं क्या ?इसमें कई ऐसी विशेषीकृत एजेंसियां, कोष और कार्यक्रम हैं; वे विश्व भर में चारों ओर फैले हुए हैं। यह बड़ा अबद्ध प्रतीत होता है। किंतु महासचिव के रूप में मेरे कार्यकाल में मेरा संयुक्त राष्ट्र संघ में एकमात्र ध्येय रहा है- सोचो और कार्य करो व वह निष्पादित करे जिसे हम डीएओ कहते हैं- एकजुट होकर कार्य करना। यह हमारा नारा है।

देवियों और सज्जनों,

हम परीक्षा और चुनौती के युग में रह रहे हैं। करोड़ों लोग गरीबी में संघर्ष कर रहे हैं- इनमें से भारत के 500 मिलियन लोग शामिल हैं। वैश्विक स्तर पर द्वितीय विश्व युद्ध के अंत के बाद से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं।

आतंकी नेटवर्क विभिन्न महादेशों में भय और अस्थिरता फैलाते हैं। हमने पेरिस में ऐसी भयानक घटना होते हुए देखा है। मारे गए लोगों की संख्या के संदर्भ में मैं मानता हूं कि हमने कई स्थानों को देखा है। हाल में पेशावर में 132 स्कूली बच्चे मारे गए। पेरिस में 12 पत्रकारों और पुलिस वालों की हत्या हो गयी थी। किंतु वे हमारी स्वतंत्रता- हमारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला कर रहे थे। इसलिए रविवार को विश्व के कई नेताओं के साथ लाखों लोगों ने एक साथ मार्च किया। यदि वायवरेंट गुजरात का कार्यक्रम नहीं होता तो मैं स्वयं भी वहां होता। किंतु दुर्भाग्य से मैं वहां नहीं जा सका , मैं सोचा कि यह अधिक महत्वपूर्ण था। किंतु विश्व भर में बहुत सारी धार्मिक , जातीय और नस्लीय असहिष्णुता है जो संघर्ष को हवा देती है और विकास को बाधित करती है।

साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है। जलवायु परिवर्तन हमें उस तेजी से प्रभावित कर रहा है जितना कि हम सोच रहे हैं।

हम अपने साझा हितों के लिए एक साथ कार्य करते हुए मजबूती के साथ मिलकर मानवता के जरिये इन चुनौतियों से निपटा जा सकता है। यह कोई कठिन काम नहीं है - यह एक बड़ा अवसर है। जब मैं 40 वर्ष पहले यहां आया था , उस समय से मैंने इन दशकों में भारत के प्रभावशाली विकास देखा है। मैंने इस देश के बड़ी वैश्विक क्षमता को देखा है। आज मैं उन तीन प्रमुख भूमिकाओं पर फोकस करेंगे जिन्हें भारत इनके समाधान में भूमिका अदा कर सकता है:

प्रथम: भारत इस क्षेत्र और विश्व में शांति का वाहक बन सकता है।

दूसरा: भारत मानवाधिकार के समर्थक के रूप में कार्य कर सकता है।

तीसरा: भारत स्वच्छ विकास- स्वच्छ सतत विकास के अगुआ के रूप में कार्य कर सकता है।

ये तीन ऐसे मुद्दे हैं जिनमें आप सभी का जीवन और मानव के सभी आयाम शामिल हैं। हमारे साझा भविष्य के लिए इस मुख्य वर्ष में भारत को व्यापक रूप से योगदान देना और समर्थन करना है।

माननीय अतिविशिष्ट अतिथिगण, देवियों और सज्जनों,

मैं क्षेत्रीय सुरक्षा के साथ शुरू करता हूं।

विश्व दक्षिण एशिया में शांति , स्थिरता और समृद्धि के लिए सहायता देने के संदर्भ में विश्व भारत की ओर देख रहा है।

एक सुरक्षित क्षेत्रीय वातावरण भी भारत को अपने महत्वकांक्षी विकास लक्ष्यों को हासिल करने में सहायता प्रदान करेगा। क्षेत्रीय स्थिरता के लिए अनुबंध और सहयोग की आवश्यकता होती है।

मैं दक्षिण एशिया में सहयोग बढ़ाने के लिए भारत के नेतृत्व का स्वागत करता हूं। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत अन्य देशों के लिए महत्वपूर्ण उदाहरण है।

इस क्षेत्र में राजनीतिक नेताओं को दीर्घकाल से लंबित पड़ी शिकायतों को परे रख देना चाहिए और पुराने विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से समाप्त करने के नए रास्ते तलाशने चाहिएं। यह मामला विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान के संदर्भ में है।

पाकिस्तान और अफगानिस्तान में सतत अस्थिरता केवल उन्हीं राष्ट्रों की जिम्मेदारी नहीं है। उन्हें मजबूत संस्थाओंको तैयार करने , आर्थिक विकास में सहायता करने और बेहतर संबंध विकसित करने के लिए क्षेत्रीय संबंध बनाने की आवश्यकता है।

ऐसी चुनौतियों को इस्तांबुल प्रक्रिया और बढ़ते द्विपक्षीय और बहुपक्षीय साझेदारी जैसी पहलों से दूर किया जाना चाहिए।

मैं भारत के नेताओं को शिक्षा के आदान-प्रदान के माध्यम सहित विकास के लिए अफगानिस्तान की सहायता करने में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता हूं।

अफगानिस्तान की सुरक्षा संबंधी चुनौतियों को केवल सैन्य प्रयासों से दूर नहीं किया जा सकता है। शांति और सामंजस्य पर केंद्रित अफगान-नीत राजनीतिक प्रक्रिया आवश्यक है - और इसके लिए भारत से क्षेत्रीय सहायता की आवश्यकता है।

अधिक व्यापक रूप से बताएं तो दक्षिण एशिया के समक्ष परमाणु हथियारों के गंभीर खतरे का सामना करना पड़ रहा है। शस्त्रागारों में किसी भी नए शस्त्र के जुड़ने से परमाणु युद्ध का खतरा और बढ़ जाता है। भारत और पाकिस्तान उन 150 से अधिक देशों में शुमार है जो परमाणु हथियारों के मानवीय प्रभाव पर तीन सम्मेलनों में इस निष्कर्ष पर पहुंचे। मुझे वैश्विक स्तर पर निशस्त्रीकरण न होने से दुख है।

व्याख्यान में श्रोतागण

अन्य परमाणु शक्ति प्राप्त राष्ट्रों ने इसे सीमित करने और हथियारों की संख्या कम करने की घोषणा की है किंतु इस क्षेत्र को शामिल करते हुए कुछ राष्ट्रों में विविध प्रकार के और अत्याधुनिक हथियारों का जखीरा बढ़ रहा है।

परमाणु हथियार से संपन्न अन्य राष्ट्रों ने हथियारों के लिए परमाणु सामग्रियों के उत्पादन को बंद करने की घोषणा की है किंतु कुछ क्षेत्रों में जिसमें यह क्षेत्र भी शामिल है, इसका जखीरा बढ़ रहा है। अन्य परमाणु संपन्न राष्ट्रों ने परमाणु परीक्षणों पर अधिस्थगन की घोषणा की है किंतु दक्षिण एशिया सहित अन्य परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्रों ने व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। सरकारें अपने स्वास्थ्य बजटों में कटौती कर हथियारों में निवेश कर रही हैं। मैंने भारत से आह्वान करता हूं कि वह परमाणु अप्रसार पर अपने नेतृत्व की समीक्षा करे।

इस देश ने 1954 में व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध का पहली बार आह्वान किया था। वर्ष 1988 में भारत ने परमाणु हथियार मुक्त विश्व की एक महत्वाकांक्षी योजना का समर्थन किया था। और आज भारत पर दक्षिण एशिया को परमाणु शस्त्रागार को विकसित करने से रोकने में सहायता करने की पूरी जिम्मेदारी है। यह सिर उठा रहे हिंसात्मक अतिवाद और चरमपंथ के हमारे युग में और भी जरूरी हो जाता है। आतंकवादी इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं विशेषकर सोशल मीडिया का ताकि युवा लोगों की भर्ती की जा सके, धन इकट्ठा किया जा सके और धृणा फैलाया जा सके। मैंने निर्दोष लोगों की जान लेने वाले आतंकवाद की बार-बार निंदा की है।

पूरा विश्व 2008 में मुम्बई में हुए भयानक और विनाशकारी आतंकी हमले के बाद भारत के साथ खड़ा हुआ। विश्व एक बार फिर पिछले महीने पेशावर में निर्दोष विद्यार्थियों और शिक्षकों पर जघन्य व कायरतापूर्ण हमलों से खौफज़दा है। और कल ही पूरा विश्व पेरिस में जमा हुआ।

संयुक्त राष्ट्र संघ के पास वृहद वैश्विक आतंकवाद रोधी रणनीति है जिसे भारत पूरी तरह समर्थन करता है। मैं आतंकवाद से निपटने के संबंध में संयुक्त राष्ट्र के साथ भारत के सहयोग का स्वागत करता हूं। और मैं भारत से आग्रह करता हूं कि वह चार स्तंभों वाली रणनीतियों पर अपने पड़ोसी देशों के साथ कार्य करे: उन परिस्थितियों को दूर करना जिससे आतंकवाद फैलता है ; इसे रोकना और निपटना ; राष्ट्र क्षमता का निर्माण; और मानवाधिकार व कानून के शासन के प्रति सम्मान को सुनिश्चित करना।
अब मैं वैश्विक सुरक्षा के संबंध में बात करूंगा।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति स्थापित करने संबंधी अभियानों में अपने उदार योगदान के माध्यम से एक सामूहिक दृष्टिकोण को दर्शाया है।

आज 8000 से अधिक भारतीय शांति सैनिक संयुक्त राष्ट्र के अभियान में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। मैंने उनके साहस को देखा है- और मैं उनके बलिदान का सम्मान करता हूं। संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन में कार्य करते हुए एक सौ अट्ठावन भारतीय शांति सैनिकों की जानें चली गयीं। हम अपने शांति सैनिकों की रक्षा करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

तीन में से दो- प्रत्येक तीन में से दो शांति सैनिक जारी संघर्ष की दशा में कार्य करते हैं , जहां या तो क्षणभंगुर शांति समझौता होता है अथवा कोई शांति समझौता नहीं होता है।
माली जैसे स्थानों पर सशस्त्र समूह दूसरे देश के आपराधिक नेटवर्क और आतंकवादी संगठनों के साथ सेना में शामिल हो रहे हैं।

इन खतरों को दूर करने , नागरिकों की रक्षा करने और मानवाधिकार की रक्षा करने के लिए हमें एक सतत रणनीति की आवश्यकता है जो अंतरराष्ट्रीय समुदाय और सुरक्षा परिषद् द्वारा पूर्णत: समर्थित हो।

हमारे दलों को सही उपकरण , कार्मिक, प्रशिक्षण और विशेषज्ञता की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त उन्हें उन देशों की सहायता की आवश्यकता है जिनका युद्धरत पक्षों पर प्रभाव हो।
हम ठोस परिणाम के साथ शांति कार्य में सुधार ला रहे हैं।

हमने अपने मिशनों पर फोकस किया है, प्रभावी नई प्रौद्योगिकियों को लागू किया है और अंशदाता देशों के आधार को और व्यापक बनाया है।

किंतु अभी भी बड़ी चुनौतियां मौजूद हैं। हमें बेहतर वित्तपोषण , प्रशिक्षण और उपकरण की

आवश्यकता है। हमें कमान और नियंत्रण में सुधार की आवश्यकता है। हमारे सैनिक दस्ते और पुलिस को पूर्ण संकल्प के साथ चुनौती पूर्ण अधिदेश का संपादन करना चाहिए। हमें पहले से अधिक जटिल अधिदेशों को निष्पादित करने की आवश्यकता है। और हमें समग्र रूप से मजबूत राजनीतिक समर्थन की आवश्यकता है।

इसलिए, मैंने एक उच्च स्तरीय स्वतंत्र पैनल की स्थापना की है ताकि शांति अभियानों की व्यापक समीक्षा की जा सके।

इसके सदस्यों में से एक सदस्य सेवानिवृत्त भारतीय लैफ्टिनेंट जनरल अभिजीत गुहा है जिनके पास संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में वर्षों का अनुभव है।

यह पैनल सिफारिश करेंगा ताकि भारत के साथ संयुक्त राष्ट्र की जरूरतमंद लोगों की बेहतर सेवा में सहायता की जा सके।

देवियों और सज्जनों,

अब मैं दूसरे क्षेत्र की बात करूंगा जहां भारत को मुख्य भूमिका अदा करनी है: मानवाधिकार। विविधता भारत की सबसे उत्कृष्ट विशेषता है। यह देश विभिन्न संस्कृति , सजातीय समूहों, धर्मों और भाषाओं को बोलने वाले लोगों का घर है। भारत और सभी देशों में व्यक्ति मुक्त और समानता के साथ जन्म लेता है। लोगों को उनके सजातीयता , धर्म, लैंगिक अभिमुख अथवा लैंगिक पहचान के निरपेक्ष सम्मान, प्रतिष्ठाऔर सुरक्षा का हक है। संयुक्त राष्ट्र कहीं - उत्तर , दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में उन अधिकारों की रक्षा करता है।

विकास मॉडल की पहुंच सभी समूहों तक होनी चाहिए।समावेशी विकास से साझा समृद्धि आती है। भारत ने पहले ही लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है और यह समावेशी विकास के लाभ लाखों और लोगों को प्रदान कर सकता है।

कल मैंने गुजरात में महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम का दौरा किया था। यह देख कर मैं बड़ा प्रभावित हुआ कि किस प्रकार उन्होंने गांधी जी के पत्रों और अन्य कीमती शिल्पकृतियों को संभाल कर रखा है। और मैं गांधी जी की शिक्षा की भावना को अक्षुण्ण रखने की हमारी सामूहिक जिम्मेदारी पर विचार किया।

उन्होंने अन्याय के विभिन्न रूपों - उन लोगों जिन्हें उस समय "अछूत" माना जाता था के लिए संघर्ष किया। उनके संघर्ष के परिणामस्वरूप जाति आधारित भदेभाव पर प्रतिबंध लगाते हुए ऐतिहासिक संकल्प लिया गया। आज भारत के पास ऐसे कानून हैं जो न केवल समानता की बात करता है बल्कि पूर्व के भेदभाव को समाप्त करने के लिए सकारात्मक कदम भी उठाता है। किंतु लाखों दलित, जनजातीय और

अन्य लोग अभी भी भेदभाव का सामना करते हैं, विशेषकर महिलाएं और लड़कियां। बहुत सारे समुदायों में धार्मिक अल्पसंख्यकों को भी कष्ट उठाना पड़ता है। हमें समानता संबंधी गांधी जी के संघर्ष को जारी रखना चाहिए।

युवा कूटनीतिज्ञ के तौर पर मैंने कई बार राजघाट का दौरा किया , जब कभी भी वीआईपी आए मैं उनके साथ गया। महासचिव और विदेश मंत्री के रूप में मैंने अपनी श्रद्धांजलि दी। मैं वास्तव में सात सामाजिक बुराईयों से बचने का अभ्यास करता हूं जिनके बारे में गांधी जी ने उल्लेख किया। यदि राजनीतिज्ञ, व्यवसायी अथवा वैज्ञानिक और अन्य पेशे से जुड़े लोग भी उनके द्वारा बतायी गयी इन बुराईयों से दूर रहने का अभ्यास करें तो मैं समझता हूं कि यह दुनिया बहुत ही सामंजस्यपूर्ण हो जाएगा और कोई संघर्ष नहीं होगा और कोई भ्रष्टाचार नहीं होगा।

मैं इसकी प्रशंसा करता हूं , पहले भी उनके द्वारा बतायी गयी बातों का प्रशंसा करता हूं जिसे उन्होंने हमें पालन के लिए बताया। जब मैं कल फिर साबरमती गांधी आश्रम गया तो मैं विनीत और प्रेरित हुआ। कल मेरे भाषण में मैंने विश्व के नेताओं से कहा , ''हम सभी को उनकी शिक्षा से प्रेरणा लेनी चाहिए।''

कई कठिन चुनौतियों से निपटने में मैं मानता हूं कि शिक्षा एक रास्ता है। विद्यालय को वैश्विक नागरिकता का उद्यान होना चाहिए- इसे विभाजनकारी विचारधाराओं की युद्ध भूमि नहीं होना चाहिए। पूरा विश्व बलात्कार और यौन उत्पीड़न जैसे जघन्य अपराध सहित महिलाओं के विरूद्ध होने वाली हिंसा के विश्वव्यापी महामारी का सामना कर रहा है। भारत की चुनौती विशेष है। संयुक्त राष्ट्र संघ इस हिंसा को रोकने, महिलाओं की रक्षा करने, पीड़ितों को सहायता देने और ऐसे जघन्य कार्यों को करने वालों को सजा देने के लिए सरकार के प्रयासों की सहायता करने के लिए हर संभव सहायता करेगा।

मैंने लैंगिक समानता के लिए मानसिकता में बदला लाने और लोगों को जुटाने के लिए 'ही फॉर शी' अभियान नामक एक वैश्विक अभियान शुरू किया। मैं प्रधानमंत्री मोदी को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूं।

जब तक किसी देश में महिलाएं पिछड़ी हुई है , तब तक वह देश विकास नहीं कर सकता है। मैं यह कहता रहा हूं कि जहां हमारे विश्व में हम बहुत सारे विभिन्न संसाधनों , प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल करते हैं, वहीं हमारे मानव जीवन में कम उपयोग वाला संसाधन महिला है। विश्व की आधे से अधिक जनसंख्या महिलाओं की है। उसके बाद यह स्वाभाविक है कि यदि हम कुछ अधिक नहीं दे सकते हैं तो कम से कम उनके साथ समान व्यवहार किया जा सकता है , उन्हें समान दर्जा दिया जा सकता है। इसलिए महासचिव के रूप में मैं लैंगिक समानता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देता रहा हूं। मैं इसे एक उदाहरण द्वारा समझाने की कोशिश करता हूंताकि अन्य विश्व नेता और कारोबारी नेता संयुक्त राष्ट्र के उदाहरण का अनुकरण करना चाहिए। मुझे आपको यह बताते हुए खुशी है कि मेरे महासचिव बनने के बाद

से संयुक्त राष्ट्र संघ में बहुत कुछ परिवर्तन हुआ है। लक्ष्मी पुरी अब संयुक्त राष्ट्र महिला आयोग की उप प्रमुख हैं। मैंने ही संयुक्त राष्ट्र महिला आयोग की स्थापना की थी। कुछ खंडित विभाग , छोटे या बड़े कार्यालय थे, जिन्हें मैंने एक साथ मिलाकर एक बड़े विभाग- संयुक्त राष्ट्र महिला आयोग की स्थापना की। मुझे इस संयुक्त राष्ट्र महिला आयोग के लिए भारत सरकार के मजबूत समर्थन की आवश्यकता है। मैं भारत के कई नागरिक सामाजिक समूह की सराहना करता हूं जो महिलाओं और अल्पसंख्यक समूहों को सशक्त बनाने के लिए संसाधन अथवा मान्यता के बिना कार्य करते हैं।

दो वर्ष पहले न्यायाधीश वर्मा ने भारत में महिलाओं के विरूद्ध होने वाली हिंसा को समाप्त करने के लिए बहुमूल्य सिफारिशें की थी। मेरा भरोसा है कि सरकार उन सिफारिशों पर कार्य करे।
भारत ने लैंगिक समानता के प्रति अपनी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को दर्शाया है।

विश्व भारत की एक बेटी डॉ. हंसा मेहता को सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणा में इस कथन को बदलने के लिए धन्यवाद कर सकता है जिसमें कहा गया कि ''सभी पुरूष स्वतंत्र और समान पैदा हुए हैं।''अब मानवाधिकार संबंधी सार्वभौमिक घोषणा में यह बदल गया है- ''सभी मानव जाति स्वतंत्र और समान पैदा हुए हैं।'' यह कितना उपयुक्त और उचित है।

मैं लैंगिक सहिष्णुता और भेद-भाव हीनता को बढ़ावा देने का आह्वान करता हूं जहां महिलाओं और सभी अल्पसंख्यक समूहों की पूर्ण भागीदारी से धारणीय शांति आए।

अतिविशिष्ट अतिथिगण, देवियों और सज्जनों,

तीसरा क्षेत्र जहां मैं भारत में विशाल संभावना देखता हूं वह है धारणीय विकास। जब धारणीय विकास और जलवायु परिवर्तन की बात आती है तो मुझे सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर बात करने से अधिक इस पर बात करने की ऊर्जा आ जाती है, क्योंकि मुझे धारणीय विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के योगदान में अधिक संभावना और आशा दिखता है।

यह विश्व अब मिलेनियम विकास लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए नए एजेंडा को आकार दे रहा है। मैं चाहता हूं कि भारत इस प्रक्रिया में पूर्णत: शामिल हो। मैं ''मेक इन इंडिया'' - मैंने सोचा कि यह ''मेड इन इंडिया'' है अब यह ''मेक इन इंडिया'' है, का स्वागत करता हूं। यह प्रधानमंत्री मोदी की एक बेहतर नीति है- यह राष्ट्रीय कार्यक्रम इस देश को विश्व के एक निर्माण केन्द्र के रूप में बदलने के लिए है। मैंने कल गुजरात में वायवरेंट गुजरात शिखर सम्मेलन की बैठक में इसकी संभावना देखी। यह सचमुच अनुनादी है। मैं मानता हूं कि संपूर्ण विश्व अब इस गतिशीलता और अनुनाद के साथ गुंजायमान है।

किंतु मैं ''मेक इन इंडिया'' में दो शब्दों को शामिल करूंगा- ''मेक इट ग्रीन इन इंडिया।'' इसके बारे में क्या है?''मेक इट ग्रीन इन इंडिया!''

पर्यावरण के प्रति सम्मान दर्शाते हुए भारत समग्र रूप से अधिक मानवीय प्रगति कर आर्थिक रूप से प्रगति कर सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने 100 स्मार्ट शहरों का निर्माण कर एवं ऊर्जा सुरक्षा को आगे बढ़ाकर इसे प्राथमिकता प्रदान कर रहे हैं। यह जलवायु परिवर्तन के संबंध में अंतरराष्ट्रीय प्रयास का केन्द्र भी है।

जलवायु परिर्वतन संबंध कार्य से बिजली उत्पादन , गरीबी में कमी, स्वास्थ्य में सुधार और ऊर्जा सुरक्षा में बढ़ोतरी हो सकती है। नवीकरणीय ऊर्जा से विशाल कारोबारी अवसर पैदा हो सकते हैं। मैंने गुजरात में कैनाल टॉप सोलर पावर प्लांट में कल इसे देखा। ऊर्जा दक्षता से उत्पादकता में बढ़ोतरी के साथ उत्सर्जन और प्रदूषण में कमी आती है।

इस वर्ष विश्व के पास पेरिस जलवायु सम्मेलन में अर्थपूर्ण वैश्विक समझौता करने का अवसर है। इस समझौते से वैश्विक बाजारों में बड़ा निवेश , नवोन्मेष कार्य और कम कार्बन उत्सर्जन वाली प्रौद्योगिकियां आ सकती हैं। भारत वस्तुओं और संसाधनों के इस नए प्रवाह का बड़ा हिस्सा हो सकता है।

महामहिम श्री बान की मून प्रश्नोंत्तरी सत्र में।

देवियों और सज्जनों, भारत ने गांधी के समय से लेकर आज तक उल्लेखनीय वैश्विक नेतृत्व का प्रदर्शन किया है।

मैं संयुक्त राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए भारत की सराहना करता हूं। भारत हमारे सैन्य

योगदान करने वाले देशों में , संयुक्त राष्ट्र लोकतांत्रिक कोष- और कई अन्य संयुक्त राष्ट्र पहलों में हमारे अंशदाताओं, हमारे कारपोरेट ग्लोबल काम्पेक्ट सदस्यों में शीर्ष स्थान पर है। साथ ही साथ जो चुनौतियां यहां है वही वैश्विक चुनौतियां हैं यथा गरीबी , लैंगिक असमानता, भेदभाव, पर्यावरण संबंधी क्षय, चरमपंथ और अन्य सुरक्षा खतरे।

संयुक्त राष्ट्र संघ अपनी 70वीं वर्षगांठ पर इन चुनौतियों का सामना करने के लिए देशों को एकजुट कर रहा है। 2015 वैश्विक कार्रवाई का समय है। यदि हम इस समय इसके लिए एकजुट हों तो हम उन कष्टों को दूर कर सकते हैं जिसने लंबे समय से हमारे ग्रह को घेर रखा है। हम युवाओं तक पहुंच बना सकते हैं और वैश्विक नागरिक की इस नई पीढ़ी - विशेषकर भारत जहां विश्व के किसी देश की तुलना में सबसे अधिक युवा हैं, में एकजुट कर सकते हैं। हम सभी के लिए एक नया भावी सम्मान और सुरक्षा देने का प्रयास कर सकते हैं।

महान कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लोगों को अपने मतभेदों को दूर करने का आह्वान किया था। उन्होंने कहा, ''हम विश्व के समक्ष यह घोषणा करें कि सुबह हो गयी है- यह सुबह अपने आपको बाधाओं के पीछे खड़े होकर छिपने के लिए नहीं है बल्कि यह परस्पर समझ हेतु बातचीत करने और सहयोग के साझा क्षेत्र में विश्वास के लिए है।''

देवियों और सज्जनों,

मैं वास्तव में इस देश भारत के लोगों और विश्व के हमारे मानव परिवार के लिए इस विचार की अनुभूति हमारे परिवर्तनकारी कार्यक्रम में इसकी गणना करता हूं।

मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनने के लिए आपका धन्यवाद।

****